सर्दियों के मौसम में ली जाने वाली आवश्यक सावधानियाँ

१. चूज़ों की डिलीवरी फार्म पर सुबह के समय कराएँ, रात को न कराएँ।

२. शेड के परदे डालकर रखें तथा शेड के ब्रूडर को चूज़े आने के २४ घंटे पहले चालू कर दें। जिससे शेड का तापमान चूज़ों के अनुकूल हो।

३. बुरादे की ३-४ इंच मोटी परत बिछाएँ एवं उसके ऊपर दो परत अखबार/पेपर की बिछाएँ।

४. चूज़ों को चिक बॉक्स से निकालकर इलेक्ट्रल पाउडर और पोटेश्यिम क्लोराइड मिला पानी पिलाकर शेड में छोड़ते जाएं।

५. पानी तथा दाने के बर्तन, ब्रूडर के पास ही रखें। इससे पानी भी थोड़ा गर्म बना रहेगा, और चूज़े को ब्रूडर से दूर भी नहीं जाना पड़ेगा।

६. २ से ३ घंटे तक पानी पीने के बाद चूज़ों को २ से ३ घंटे तक केवल मके का दलिया ही दें। उसके बाद ही प्री-स्टार्टर दाना चूज़ों को दें।

७. पानी तथा दाने के बर्तन उचित संख्या में लगाएं। (३-४ बर्तन १०० चूज़ों पर)

८. ब्रूडिंग - १. सर्दियों में चूज़ों की ब्रूडिंग अतिमहत्वपूर्ण होती है। ब्रूडिंग चूज़ों का भविष्य तय करती है। कम एवं ज्यादा ब्रूडिंग दोनों ही चूज़ों के लिए हानिकारक होती है। उचित ब्रूडिंग होने से चूज़ों को बढ़त व वजन दोनों ही अच्छे होते हैं।

२. ब्रूडिंग का तापमान : पहला सप्ताह :-

ब्रूडर का तापमान ९० °ए . ९५ °ए

शेड के अंदर का तापमान ७५ °ए

प्रत्येक चूज़े को २ वॉट ऊर्जा मिलनी चाहिये।

दूसरे सप्ताह से हर सप्ताह ५ °ए तापमान तब तक कम करते जाना है जब तक शेड का तापमान चूज़ों के अनुकूल न हो जाए।

३. ब्रूडिंग के साधन -

१. बांस की टोकरी - बांस की टोकरी में १०० वॉट के ४ बल्व या २०० वॉट के २ बल्व लगाकर रखें। एक टोकरी २५०-३०० चूज़ों के लिए पर्याप्त है। पहले ५-६

दिन इसकी ऊँचाई जमीन से ६ से ८ इंच रखना चाहिए। उसके बाद (७-१० दिन) टोकने की ऊँचाई १०-१२ इंच रखना चाहिये।

२. गैस ब्रूडर - गैस ब्रूडर बाजार में क्षमता के अनुसार मिलते हैं। जितनी क्षमता के ब्रूडर हैं उतने चूज़ों की ब्रूडिंग के लिए लगाना चाहिए। जैसे १००० चूजों के लिए, १००० चूजों की क्षमता का ब्रूडर।

गैस ब्रूडर शेड के अंदर एक समान तापमान बनाए रखता है।

३. गैस की सिगड़ी या भट्टी - लकड़ी का बुरादा या कोयले को सिगड़ी में डालकर जलाएं, जलने के बाद सिगड़ी/भट्टी को शेड के अंदर रखें। जिस स्थान पर बिजली की समस्या है वहां गैस/सिगड़ी/भट्टी से ब्रूडिंग कर सकते हैं। सिगड़ी/भट्टी से ब्रूडिंग करने में सावधानी यह रखें कि चूज़े उसमें गिरें न एवं शेड के अंदर धुंआ न हो व सफोकेशन भी न हो।

९. स्थान (स्पेस) -मुर्गों को पर्याप्त जगह मिलना बहुत ज़रूरी है अन्यथा व्अमतबतवूकपदह व कम जगह की वजह से अनेक बीमारियां मुर्गों में पनपती हैं तथा दाने व पानी के लिए भी प्रतियोगिता होती है।

उम्र	चूज़ा/जि
० - १० दिन	३ चूजे/जि
११ - २० दिन	२ चूजे/जि
२१ - ३२ दिन	१ चूज़ा/जि

पांचवे सप्ताह के बाद या १ किलो वजन के बाद प्रत्येक मुर्गे को १.५ या २ वर्गफुट जगह देना चाहिये।

१०. वेन्टीलेशन :

अच्छा वेंटीलेशन, मुर्गों की अच्छी बढ़त कराता है। शेड में सीधी हवा नहीं लगनी चाहिए। खराब वेन्टीलेशन, अमोनिया निर्माण कराता है तथा बुरादे को भी सूखने नहीं देता है। सर्दियों के मौसम में वेन्टीलेशन का खास ध्यान रखें, इसके लिए मौसम के अनुसार परदों का प्रबंधन करें। दोनों

साइड के परदों को ऊपर से एक या आधा फुट खुला छोड़ें, परदे पूरे बन्द न करें। अधिक ठण्ड होने पर रात के समय शेड को परदों को पूरा बन्द कर सकते हैं। (शुरू के १० दिन)

१३. लिटर प्रबंधन :

लिटर ताजा, सूखा व फंगस, वायरस परजीवी व जीवाणु मुक्त होना चाहिये। लिटर धूलरहित होना चाहिए तथा बहुत सूखा एवं बहुत गीला नहीं होना चाहिये। लिटर मे २०-२५ प्रतिशत नमी उचित है। लिटर के ऊपर पानी नहीं गिरना चाहिये। सप्ताह में कम से कम दो बार लिटर की गुड़ाई करवाएँ तथा उसमें एक किलोग्राम चूना २० वर्गफुट जगह के हिसाब से मिलवाएँ। ऐसा करने से लिटर सूखा बना रहेगा तथा अमोनिया निर्माण भी रूकेगा।

मुर्गियों में संक्रामक सर्दी एवं बचाव

संक्रामक सर्दी को हिन्दी बोलचाल में नजला-जुकाम और वैज्ञानिक भाषा में इन्फैक्शियस कोरायजा कहते हैं। इस बीमारी से विश्व के अनेक भागों के साथ भारत में भी बहुत मुर्गियाँ मरती हैं जिससे किसानों को विशेषकर ठण्ड एवं कम तापमान में बहुत आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। इसे सामान्यतया कोरायजा भी कहते हैं।

संक्रामक सर्दी या कोरायजा मुर्गियों में मिलने वाली तीव्र छूत की बीमारी है, जिसमें नाक, आँख एवं मुंह से तरल पानी जैसा निकलता है साथ ही चेहरे पर सूजन एवं सांस लेने में कठिनाई होती है। यह रोग उन मुर्गी घरों में अधिक फैलता है, जहां कम जगह में अधिक मुर्गी घनत्व रहता है। यह सभी उम्र की मुर्गियों में फैल सकता है।

कारण

कोरायजा का कारण हीमोफिलश पैरागैलीनेरम नामक जीवाणु होता है। ये जीवाणु बहुत नाजुक होते हैं, जो मुर्गी के शरीर के बाहर तुरन्त मर जाते हैं। ये ग्राम निगेटिव, छड़ के आकार के अचल जीवाणु होते हैं। इस रोग के सहायक कारकों में वातावरण परिवर्तन, नमी वाले मुर्गी घर, अधिक भीड़-भाड़ एवं उष्णशीत आदि हैं। दाने में विटामिन-ए की कमी तथा आंत में गोलकृमि की उपस्थिति से इस रोग को बढ़ावा मिलता है।

रोग प्रसार

कोरायजा का संक्रमण निम्न प्रकार से हो सकता है :-

१. संक्रमित मुर्गियों का नये मुर्गी समूहों में सीधे सम्पर्क द्वारा।

२. हवा में पानी की छोटी बूंदों द्वारा एक से दूसरी मुर्गियों में यह रोग फैल सकता है।

३. संक्रमित मुर्गियों के स्त्राव का पानी में मिलने से एवं दाने से।

४. हवा के द्वारा भी यह रोग फैल सकता है।

<u>लक्षण</u>

संवेदनशील मुर्गियों में इस रोग के लक्षण संक्रमण के ३६ से ४८ घंटे बाद दिखाई देने लगते हैं। यदि कोई दूसरी बीमारी मुर्गियों में नहीं है तो यह रोग १०-१२ दिनों में खत्म हो जाता है, लेकिन तीव्र संक्रमण में ३ सप्ताह तक हो सकता है। रोग ग्रस्त मुर्गियों के आँख, नाक, व मुँह से पानी निकलता है, जो बाद में गाढ़ा हो जाता है तथा नाक के चारों ओर जमा होकर सूख जाता है। आंखों में पीले रंग का कीचड़ जमा हो जाने से, बाहर की ओर उभरी जान पड़ती है। आंख, सिर में सूजन आ जाती है, जो बाद में कलगी और लोलक तक फैल जाती है। सांस की नली एवं तालू में भी गाढ़ा पदार्थ जमा हो जाने के कारण मुर्गियों को सांस लेने में कष्ट होता है जिससे घरघराहट की आवाज आती है। मुर्गियों को खांसी एवं छींक आने लगती है। रोग ग्रसित मुग्रियां सुस्त होकर अलग बैठ जाती हैं, पंख फड़फड़ासी हैं तथा दाना-पानी लेना बंद कर देती हैं जिससे मुर्गियों का वजन घटने लगता है तथा अण्डादेय मुर्गियों में अण्डोत्पादन १०-४० प्रतिशत तक घट जाता है। मुंह में छाले पड़ने से पक्षियों की स्थित अधिक खराब हो जाती है।

ठण्ड के दिनों में भी कॉक्सी आती है। ठण्डी में कॉक्सी का कारण है कि रात को ठण्ड के दिनों में लिटर के ऊपर ओस पड़ती है और जरा सी ओस और उसकी आर्द्रता लिटर में कॉक्सी बढ़ाने के लिए यथेष्ट है। इसलिए मैंने कहा है कि ठण्ड के दिनों में रात को भी रेकिंग होना चाहिये ताकि गीला लिटर सूखे लिटर में मिलता जाए।

ऐसा करने से ठण्ड के दिनों में कॉक्सी की समस्या भी कम हो सकती है।

<u>सस्ती ठतववकपदह .</u>

पूरे हिन्दुस्तान में ठण्ड के दिनों में ब्रूडिंग अच्छी नहीं होती इसलिए हमें बहुत अधिक ब्रूडर जो सस्ते हों बनवाने पड़ेंगे।

महत्वपूर्ण चीज़ खूब ठण्ड पड़ रही है और मुर्गे थोड़ा सुस्त हो रहे हैं और उनका वजन नार्मल बढ़ रहा है। हम ठण्ड में दाना बढ़ाकर दे सकते हैं।

ठण्ड में मैनेज़मेंट

ठण्ड में हम मुर्गियों जितने दिन सिकुड़ा बैठने देंगे उतने ही दिन मुर्गियां सिकुड़ी बैठी रहेंगी। अपने यहाँ चौकीदार रहते ही हैं और ज़रूरत पड़ी तो कुछ और लेबर रखकर हमें कुछ काम करना चाहिये। ब्रायलर ब्रीडर्स में हमें सुबह जैसे ही लाईट जलायें वैसे ही मुर्गियों को दौड़ाना शुरू करना चाहिये और यह बार-बार दौड़ायें क्योंकि एक बार दौड़ायेंगे तो वह फिर बैठ जाएगी तो उसे फिर दौड़ायें। जैसा कि हमारे साथ होता है कि अगर हम सुबह उठकर चलने-फिरने लगें तो ठण्ड कम लगती है। बार-बार दौड़ाने से मुर्गियां चैतन्य हो जायेंगी। यह ब्रायलर में भी होना चाहिये, ब्रीडर में, चिक्स में, ग्रोवर्स में, बड़ी मुर्गियों में याने सभी में यह काम होना चाहिये।